13

आदमी जिसने आंखें खोलीं और बन्द कीं

(2 राजाओं 6:8-17)

हम एलीशा की सार्वजनिक सेवकाई में पहुंच गए हैं। अपने पहले अध्ययनों में हमने तीन सेनाओं को बचाने की एलीशा की कहानी देखी थी, पर अधिकतर अन्य घटनाएं निजी ही रही हैं। नामान की चंगाई से लेकर अधिकतर शेष घटनाएं राष्ट्रीय अगुओं के साथ नबी के सम्बन्ध के गिर्द ही घूमती हैं।

इस शृंखला के पहले पाठ में मैंने कहा था कि एलिय्याह ने ''तन्त्र के बाहर'' (उस समय के राजनैतिक और सामाजिक ढांचे के बाहर) काम किया, जबकि एलीशा ने ''तन्त्र के भीतर'' काम किया। बढ़िया कौन सा है ? उत्तर है कि ''परिस्थितियों पर निर्भर करता है।'' एलिय्याह के समय में जब स्थापित अधिकारियों के साथ काम करने की कोई आशा नहीं थी, तो परमेश्वर को एक आदमी चाहिए था, जो ''तन्त्र के बाहर रहकर'' काम कर सके। जब एलीशा की सेवकाई आरम्भ हुई, तो परिस्थिति में कुछ सुधार आ गया था और परमेश्वर को एक ऐसा आदमी चाहिए था जो ''तन्त्र के भीतर'' काम कर सके। एलीशा ने यही किया, जैसा कि हम पुस्तक के शेष भाग में देखेंगे।

इस और अगले पाठ में हम एलीशा के जीवन की प्रसिद्ध घटनाओं का अध्ययन करेंगे। इन घटनाओं में नबी ने आंखें खोलीं और बन्द कीं। कहानी में वह सब कुछ है, जिनकी हमें आवश्यकता है।

घबराया हुआ राजा (6:8-14)

विवरण का आरम्भ होता है, ''और अराम का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था'' (आयत 8क)। यह राजा सम्भवतया बेन्हदद था (देखें आयत 24)। अराम और इस्राएल के बीच शत्रुता पाई जाती थी। इस कहानी के समय में इस्राएल के साथ बेनहदद का ''युद्ध'' मुख्यतया इस्राएली सीमा पर हमले करने के लिए सिपाहियों की टुकड़ियां भेजकर होता था (देखें 5:2; 6:23ख)।

योजनाएं जो नाकाम हो गईं

बेनहदद ने अपनी सेना के अगुओं को तैयार करके योजनाएं बनाईं: ''अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी'' (6:8ख)। अनुवादित शब्द ''छावनी'' का अर्थ स्पष्ट नहीं है पर इसमें तम्बू लगाने की जगह ढूंढने से बढ़कर कुछ है। REB में ''मैं फलां-फलां दिशा में आक्रमण करना चाहता हूं।'' CJB में है ''मैं फलां फलां जगह पर छावनी लगाऊंगा।'' राजा का उद्देश्य हो सकता है कि इस्राएली सिपाहियों को घात लगाकर मारना हो, या हो सकता है कि वह उन्हें चकित करके इस्राएल के राजा को पकड़ने की इच्छा रखता हो। (आयत 9 में ''तू'' शब्द पर ध्यान दें।) परन्तु

जब भी उसकी टुकड़ियां उस स्थान पर जाती, जहां उसने जाल बिछाने की योजना बनाई हुई थी, वह स्थिति इतनी भारी सुरक्षा में होती (देखें आयत 10क) कि उन्हें पराजय ही मिलती।

राजा की परेशानी का कारण यह था कि यहोवा उसकी योजनाएं एलीशा को बताता रहा था। नबी को गेहजी की गतिविधियां तो पता ही थीं (5:26क), उसे बेन्हदद की चालों का भी ज्ञान था। एलीशा यह जानकारी इस्राएल के राजा (सम्भवतया योराम को दे देता, 6:9क)। एलीशा को योराम पसन्द नहीं था (देखें 3:13, 14), पर उसने व्यक्तिगत शत्रुता को परमेश्वर के राष्ट्रीय रक्षक के रूप में अपनी भूमिका के साथ हस्तक्षेप नहीं करने दिया।

एलीशा ने राजा के पास संदेश भेजा: ''चौकसी कर और अमूक स्थान से होकर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करने वाले हैं'' (6:9ख)। ''तू'' शब्द राजा की सेना या स्वयं राजा के लिए हो सकता है। अब तक राजा योराम को एलीशा के बारे में काफ़ी कुछ पता चल चुका था (देखें 3:18, 24; 5:8) जिससे उसे समझ आती कि जो नबी कहता है उसे उसकी सुननी चाहिए। इस कारण उसने उस सूचना के आधार पर जो उसे दी गई थी काम किया: ''तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा करके परमेश्वर के भ्भक्त ने उसे चिताया था, भेजकर, अपनी रक्षा की'' (6:10क)।

अराम का राजा बार-बार हार जाता था (आयत 10ख)। इतनी बार कि इसे संयोग नहीं कहा जाता सकता था। आयत 11 के अनुसार, ''अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया'' (आयत 11क)। इब्रानी वाक्यांश में ''घबरा गया'' है, इसका अर्थ ''लहरों पर डोलना'' है।[1] CEV में कहा गया है कि राजा ''क्रोध से भर गया'' था।

अराम के राजा ने निर्णय लिया कि उसके कर्मचारियों में से कोई द्रोही होगा, जो उसकी योजनाएं शत्रु को जाकर बता देता है। उसने अपने सैनिक सलाहकारों को इकट्ठा किया और उनसे पूछा, ''क्या तुम मुझे न बताओगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है?'' (आयत 11ख)। सप्तति अनुवाद में, ''इस्राएल के राजा के लिए मेरे साथ किसने धोखा किया है?''[2]

यह अवश्य ही तनाव भरा समय होगा। राजाओं के मन में शक आ जाने पर कइयों के कत्ल हो जाते थे। फिर वहां उपस्थिति लोगों में से एक ने कहा: ''एलीशा जो इस्राएल में भविष्यवक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू शयन की कोठरी में बोलता है'' (आयत 12)। ''जो तू शयन की कोठरी में बोलता है'' अत्यधिक व्यक्तिगत विचारों और बातों को कहने के लिए अलंकार की भाषा है (सभोपदेशक 10:20 से तुलना करें)।

मुझे और आपको यह याद रखने की आवश्यकता है कि हम जो कुछ भी करते हैं, जो कुछ भी कहते हैं, जो कुछ भी सोचते हैं, उसमें से कुछ भी परमेश्वर से छिपा नहीं है। ''सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है, बरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुएं खुलीं और बेपरद हैं'' (इब्रानियों 4:13)। हैनरी ब्लंट की यह बात बहुत बार सच साबित होती है: ''हम कहते हैं कि परमेश्वर आंख ही है, कान ही है, ज्ञान ही है और हमारा जीवन ऐसा होता है जैसे वह बिल्कुल अंधा, बहरा और अज्ञानी हो।''[3]

बोलने वाले को कैसे पता चला कि एलीशा को जानकारी होती है? सुझाव दिया गया है कि आयत 12 वाला सेवक नामान ही था। नामान ने ही विचार किया होगा कि जो ला-इलाज का

इलाज कर सकता है उसे उस बात को जानने में कोई दिक्कत नहीं होगी कि जिसका किसी को पता न चल सकता हो। परन्तु इसका उत्तर इससे भी आसान हो सकता है। अरामियों के अपने जासूस अवश्य होंगे। उनमें से किसी ने इस्राएली सिपाहियों को बातें करते सुना होगा कि किस प्रकार एलीशा उन्हें विजय दिलाता था।

निश्चित रूप से असफल होने वाली योजना

यह तथ्य कि राजा ने माना कि एलीशा के विषय में उस आदमी की बातें सम्भवतया यह संकेत करती हैं कि नामान ने बेन्हदद को नबी की अद्‌भुत शक्तियों के बारे में बताया था। राजा ने निर्णय लिया कि उसका प्रमुख सैनिक उद्देश्य इस्राएली सिपाहियों को हराना या योराम को पकड़ना नहीं था। इसके बजाय उसे और सैनिक युक्तियां अमल में लाने से पहले नबी को नकारा करना होगा। उसने जासूसों को यह निर्देश देकर भेजा: ''जाकर देखो कि वह कहां है, तब मैं भेजकर उसे पकड़वा मंगाऊंगा'' (2 राजाओं 6:13क)।

वे शीघ्र ही इस रिपोर्ट के साथ वापस आ गए: ''वह दोतान में है'' (आयत 13ख)। दोतान सामरिया नगर से ग्यारह या बारह मील उत्तर की ओर पहाड़ी पर बसा एक गांव था। दोतान ही वह स्थान था, जहां कई साल पहले यूसुफ़ को उसके भाइयों द्वारा पकड़कर गड्ढे में फैंक दिया गया था (देखें उत्पत्ति 37:17-24)। एक लेखक इसे ''खतरे और नियति'' का स्थान कहता है।[4] एलीशा का निवास सामरिया नगर में था (देखें 2 राजाओं 5:3, 9; 6:24, 32क), परन्तु अपनी सेवकाई में वह दूर-दूर तक जाता था। स्पष्टतया वह दोतान या उसके आस-पास के इलाके में किसी काम में लगा हुआ था जिसमें उसका देर तक रहना आवश्यक था।

जब बेनहदद को पता चला कि एलीशा कहां है, ''तब उस ने वहां घोड़ों और रथों समेत एक भारी दल'' (6:14क) ''उसे लेने'' भेजा (आयत 13)। उसे इस बात की परवाह नहीं होगी कि सिपाही उसे मुर्दा लाते हैं या जीवित। राजा ने अपनी पूरी सेना नहीं भेजी (आयत 24 से तुलना करें), परन्तु उसने आमतौर पर आक्रमण करने के लिए इस्तेमाल होने वाले दल से अधिक टुकड़ियां भेजीं। इस सैनिक बल में कई पैदल सिपाही (''बड़ी सेना'') के अलावा घुड़सवार (''घोड़े'') और रथ विभाग (''रथ'') भी थे। दोतान जैसे किसी छोटे गांव को भी घेरा डालने के लिए काफ़ी लोगों की आवश्यकता होती होगी।

राजा की तर्क की शक्तियों पर आश्चर्य होता है। यदि एलीशा को उसकी सभी सैनिक योजनाओं का पता था, तो उसे इस योजना का पता क्यों नहीं होना था? यदि एलीशा को उसके शयन कक्ष में बोली गई उसकी बातें भी पता थीं (आयत 12), तो राजा को यह कैसे उम्मीद हो सकती थी कि वह उसे पकड़ पाएगा? यह एक ऐसी योजना थी जिसका असफल होना पहले से ही तय था। तौभी मानवीय दृष्टिकोण से यह चाल कामयाब लगती थी।

सेना आधी रात को दोतान में पहुंच गई (आयत 14ख)। ताकि एलीशा नगर में सिपाहियों के आने और जाने को देख न पाए। जल्दी से उन्होंने ''नगर को घेर लिया'' (आयत 14ग)। नबी के लिए बचकर भागने का कोई रास्ता नहीं रहा।

भयभीत सेवक (6:15)

एलीशा को निश्चित रूप से पता होगा कि क्या हो रहा है, पर उसने अपनी नींद खराब नहीं

की। उसका भरोसा उसमें है, जो न तो ऊंगलाता है और न सोता है (देखें भजन संहिता 121:4)।

बहुत बड़ा बल?

अगली सुबह नबी का ''सहायक'' जल्दी उठकर बाहर निकला (6:15क)। यदि यह घटना नामान की चंगाई से पहले की है तो यह सहायक गेहजी था। यह सम्भावना अधिक है कि एलीशा ने गेहजी के जाने के बाद और सेवक रख लिया था (5:27), शायद एक और नबी चेला। यदि ऐसा है तो उसके 9:1 में नबी चेला होने की बात तक केवल इस नये सहायक के बारे में एक ही बार मिलता है।

हो सकता है वह सेवक सुबह-सुबह पानी निकालने के लिए और दिनभर की अन्य तैयारियां करने के लिए उठा हो। वह एलीशा के सामरिया में लौटने की तैयारियां कर रहा होगा। यह भी हो सकता है कि उसने रात के समय शोर सुना (सेना के अपनी स्थिति सम्भालने पर) और दिन चढ़ते ही वह देखने के लिए गया।[5]

उसके बाहर जाने का जो भी कारण था, जो कुछ उसने देखा, उससे वह भयभीत हो गया: ''निकलकर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए पड़ा है'' (6:15ख)।

> जिधर भी उसकी नज़र जा सकी, उत्तर, पूर्व, दक्षिण और पश्चिम को, नगर पूरी तरह से [अरामी] सेना द्वारा लोहे की दीवार से पूरी तरह से घिरा हुआ था। ... सूर्य की रोशनी अभी पूर्वी पहाड़ों से ऊपर उठ रही थी और ... सिपाहियों के टोपों और ढालों पर उसकी चमक पड़ रही थी। सेवक रथों की गड़गड़ाहट, घोड़ों की हिनहिनाहट और [अरामी] सेना की अगवाई करने वाले अधिकारियों की बातचीत और चिल्लाना सुन सकता था।[6]

सेवक जिसे निश्चित तौर पर इस्राएल के राजा के साथ एलीशा की बातचीत की जानकारी थी, ने सही निष्कर्ष निकाला कि सेना *उन्हीं* के लिए आई थी। वह भागकर घर में गया और एलीशा को पुकारने लगा, ''हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें?'' (आयत 15ग)। उसके कहने का अर्थ था कि सब कुछ खो गया है! हमें पकड़ लिया जाएगा और सम्भवतया मार डाला जाएगा! ''यह प्रश्न कि हम क्या करें?'' यह संकेत देता है कि हम *कुछ नहीं* कर सकते। हमारे लिए कोई आशा नहीं है! यदि यह सेवक नया था तो सम्भवतया वह इस बात को न समझने का बहाना बना सकता था, जब तक वह एलीशा की ओर था कि उम्मीद कभी खत्म नहीं होती।

हावी संसार?

क्या आप एलीशा को सेवक के साथ पहचान सकते हैं? किसी अवसर पर आपको लगा है कि संसार आपके ऊपर हावी हुआ है? अपने आस पास के पाप और प्रलोभन को देखकर क्या ऐसा लगता है कि कोई आशा नहीं है? क्या आप को लगा है कि आप पुकार रहे हैं ''हम क्या करें?'' यदि हां तो आपको भी उसी संदेश की आवश्यकता है जिसकी उस सेवक को आवश्यकता थी।

निर्भय नबी (6:16, 17)

उस समय के भय के लिए तसल्ली

एलीशा ने कांप रहे अपने सहायक को शांत करने की कोशिश की: ''मत डर'' (आयत 16क)। यह शब्द पवित्र शास्त्र में आमतौर पर मिलता है; वे संदेश हर युग के परमेश्वर के सब लोगों के लिए हैं (देखें मत्ती 10:28, 31; 1 पतरस 3:14; प्रकाशितवाक्य 2:10)। भजनकार ने लिखा है, ''चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौ भी मैं न डरुंगा'' (भजन संहिता 27:3क)।

हमें क्यों नहीं डरना चाहिए? उस सेवक को क्यों नहीं डरना चाहिए? एलीशा ने आगे कहा, ''क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं'' (2 राजाओं 6:16ख; देखें 2 इतिहास 32:7)। मैं उस सहायक के बाहर भागने और नगर के गिर्द सिपाहियों की गिनती करने की कल्पना कर सकता हूं: ''1 ... 2 ... 3 ... (पपोलना, पपोलना) ... 95 ... पपोलना, पपोलना। वे तो सैकड़ों हैं!'' फिर उसके अन्दर वापस आने और गिरनती करने को देखता हूं, ''एक तो एलीशा और दूसरा मैं, हम तो दो ही हैं। बाहर *सैकड़ों* और हम यहां *दो* ही! इसका क्या अर्थ है, 'जो हमारी ओर हैं वे उनसे अधिक हैं जो *उनकी* ओर हैं'?''

फिर एलीशा ने प्रार्थना की। उसने अपने लिए प्रार्थना नहीं की। उसने एलिय्याह के इस पृथ्वी से जाने के समय ''अग्निमय रथ और अग्निमय घोड़ों को'' देखा था (2 राजाओं 2:11)। वह आत्मिक वास्तविकता से अच्छी तरह परिचित था। उसे मालूम था कि परमेश्वर उसकी रक्षा करेगा इसके बजाय उसने अपने डरे हुए सहायक के लिए प्रार्थना की। ''हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके'' (6:17क)। उसका सेवक मांस की आंखों से देख रहा था, जबकि उसे विश्वास की आंखों के साथ देखना चाहिए था। बर्टन कॉफ़मैन ने आयत 17 को ''[पुराने नियम में] सबसे अधिक प्रेरणादायक वचनों में से एक'' कहा है।[7]

''तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दीं, और जब वह देख सका, तब क्या देखा, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है'' (आयत 17ख)। दोतान का पूर्वी इलाका जो मैदान के साथ लगता पहाड़ी इलाका था।[8] एक पल पहले पहाड़ी ढलान बिल्कुल शांत थी, झाड़ियों और पेड़ों वाली घास फूस से भरा स्थान इधर-उधर बिखरा हुआ था। अब अचानक उस सहायक ने पहाड़ को ''घोड़ों और अग्निमय रथों'' से भरे देखा। वे ''एक अजीब असंसारिक चमक के साथ ... चमक रहे थे।''[9]

आयत 17 में इस्तेमाल किया गया रूपक बाइबल के ''उस महान स्वर्गीय सेना को, जो दिखाई देने और सुनाई देने वाले संसार से थोड़ा ऊपर मंडरा रहे थे'' की बात करने का एक ढंग है।[10] इस ''स्वर्गीय सेना'' के ''एलीशा के चारों ओर'' होने की बात कही गई है (आयत 17ग)। इससे पहले यह सेना स्वर्ग में परमेश्वर के सेवक एलिय्याह के साथ थी; अब यह परमेश्वर के सेवक एलीशा की रक्षा कर रही थी।

भयभीत के लिए अब शांति

एलीशा का संदेश आज भी हमारे साथ बात करता है: ''उसने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं'' (आयत 16)। हमारी सबसे बड़ी

आवश्यकताओं में से एक आत्मिक आवश्यकताओं के लिए आंखें खोलना है। यदि हम शारीरिक आंखों से देखें तो हम अपने आपको हताश और निराश ही पाएंगे। यदि हम विश्वास की आंखों से देखना सीख लें (देखें इब्रानियों 11:27), तो हमें ताज़गी और ताकत मिलेगी।

जिस प्रकार स्वर्गीय सेना एलीशा के आस-पास थी, वैसे ही परमेश्वर के स्वर्गदूत अपने लोगों को उनकी सहायता करने और उनकी रक्षा करने के लिए घेरते हैं। दाऊद ने लिखा, ''यहोवा के डरवैयों के चारों ओर उसका दूत छावनी किए हुए उनको बचाता है'' (भजन संहिता 34:7)। फिर भजनकार ने लिखा है, ''जिस प्रकार यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं, उसी प्रकार यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर अब से लेकर सर्वदा तक बना रहेगा'' (भजन संहिता 125:2)। नये नियम में स्वर्गदूतों का ''सेवा टहल करने वाली आत्माएं जो उद्धार पाने वालों के लिए सेवा करने को भेजी जाती हैं'' (इब्रानियों 1:14) के रूप में वर्णन किया गया है।

मैं बुराई के शत्रुओं की सामर्थ को कम नहीं करना चाहूंगा (देखें इफिसियों 6:12), परन्तु हमारे मनों पर यह अंकित हो जाना चाहिए कि ''जो हमारी ओर हैं, वह उन से अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं'' (2 राजाओं 6:16ख)। यीशु ने कहा कि वह ''स्वर्गदूतों की बारह पलटन से अधिक मेरे पास अभी उपस्थित कर देगा?'' (मत्ती 26:53)। इसका अर्थ 72,000 से अधिक स्वर्गदूत होगा। प्रकाशितवाक्य के सांकेतिक रूपक में परमेश्वर के बदला लेने वाले दूतों की गिनती ''बीस करोड़'' (प्रकाशितवाक्य 9:16) बताई गई है। इन अंकों का शांति से अर्थ नहीं लिया जाना चाहिए। बल्कि वे स्वर्ग की असंख्य सेना की तस्वीर पेश करते हैं।

बहुत कुछ है, जो स्वर्गदूतों के बारे में हम नहीं जानते स्वर्गदूतों के बारे में आज जो हम पढ़ते हैं वह काल्पनिक कहानियां हैं। परन्तु हम इतना जान सकते हैं कि वे सर्वशक्तिमान परमेश्वर के दूत हैं, उन्हें हमारी भलाई का बहुत ध्यान है (देखें भजन संहिता 91:11), और परमेश्वर उन्हें हमारे जीवनों को आशीषित करने के लिए इस्तेमाल करता है। पुराने नियम में एलीशा ने उसे इस प्रकार कहा: ''जो हमारी ओर हैं, वह उनसे अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं'' (2 राजाओं 6:16ख)। नये नियम में यूहन्ना ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया: ''जो तुम में है वह उससे जो संसार में है, बड़ा है'' (1 यूहन्ना 4:4)।

अगली बार जब आप किसी आत्मिक उलझन में हों तो याद रखें कि आपके लिए कौन लड़ रहा है। मूसा ने इस्राएलियों को बताया था, ''तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे शत्रुओं से युद्ध करने और तुम्हें बचाने के लिए तुम्हारे संग संग चलता है'' (व्यवस्थाविवरण 20:4)। हिज़कियाह ने अपने समय के लोगों को बताया था, ''परन्तु हमारे साथ, हमारी सहायता और हमारी ओर से युद्ध करने को हमारा परमेश्वर यहोवा है'' (2 इतिहास 32:8ख)। उनकी लड़ाइयां सांसारिक थी जबकि हमारी लड़ाई आत्मिक है, परन्तु वही परमेश्वर ''हमारी ओर से युद्ध करने को'' हमारे साथ है। पौलुस ने लिखा, ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?'' (रोमियों 8:31ख)। यदि परमेश्वर हमारा बचाव करने के लिए ''हमारी ओर'' है, तो हमारा नाश करने के लिए ''हमारा विरोधी'' कौन हो सकता है? उत्तर है ''कोई नहीं!''

एलीशा ने प्रार्थना की, ''हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके'' (2 राजाओं 6:17क)। अगली बार जब हम भय और निराशा से भरें तो हमें यही प्रार्थना करनी चाहिए, ''हे प्रभु, हमारी आंखें खोल दे और यह जानने में हमारी सहायता कर कि तू हम से प्रेम करता है

और हमारा ध्यान रखता है!''

सारांश

अगले पाठ में हम ''आदमी जिसने आंखें खोलीं और बंद कीं'' का अपना अध्ययन जारी रखेंगे। हम एलीशा और इसके सेवक के बचाव को और उसके बाद की अनापेक्षित घटना को देखेंगे। परन्तु अब पाठ का समापन करते हुए मैं हमारी अपनी आंखों के खुलने की आवश्यकता पर ज़ोर देना चाहता हूं।

पौलुस ने लिखा कि ''उन अविश्वासियों के लिए, जिन की बुद्धि को इस संसार के ईश्वर [शैतान] ने अंधा कर दिया है, ताकि मसीह जो परमेश्वर का प्रतिरूप है, उसके तेजोमय सुसमाचार का प्रकाश उन पर न चमके'' (2 कुरिन्थियों 4:4)। शायद शैतान ने आपकी आंखें उद्धार और सुरक्षा के लिए प्रभु की ओर भागने की आवश्यकता से अंधी कर दी हैं। इसी कारण हो सकता हैकि आपने अपनी आंखें परमेश्वर के वचन की महान सच्चाइयों के लिए बंद कर दी हों (देखें मत्ती 13:15)। जे. स. डब्ल्यू. नेकोल्स ने लिखा है:

> छोटे लड़के के रूप में मेरी आदत थी कि अंधेरे में चलते हुए अपनी आंखें कसकर बंद कर लेता था। कई अवसरों पर मैं किसी ऐसे इलाके में आ जाता जहां कुछ दूरी पर प्रकाश की झलक से मेरे लिए देखना सम्भव हो जाता, पर मैं कसकर बंद की हुई अपनी आंखों से ठोकर खाता; फिर मैं ठोकर खाता, गिर जाता, अपनी आंखें खोलता और देखता कि यह कितनी मूर्खता है, क्योंकि यदि मैं अपनी आंखें खोल लेता तो मैं देख सकता था।
>
> मित्रो, आप में से हज़ारों लोग बंद आखों के साथ जीवन में से गुज़र रहे हैं ...। परमेश्वर और उसके अद्‌भुत प्रेम से आंखें बंद करके-छुटकारे के उस मार्ग से आंखें बंद करके जो मसीह में से होकर जाता है। अब उस पुराने ज़माने के एलीशा की तरह मेरी प्रार्थना है, ''हे प्रभु, इनकी आंखें खोल दे कि ये देख सकें।''[11]

यदि आपकी आंखें ''बंद'' हैं तो आज ही उन्हें खोल लें और उसकी इच्छा पूरी करें!

टिप्पणियां

[1]क्लाइड एम. मिल्लर, *फर्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, अंक 7 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1991), 339. [2]वही। [3]हेनरी ब्लंट, *लेक्चर्स ऑन द हिस्ट्री ऑफ़ एलीशा* (फिलाडेल्फिया: हरमन हूकर, 1839), 135. [4]जे. वर्मन मैक्गी, *डेंजर एंड डेस्टिनी: एपिसोड इन द लाइफ़ ऑफ़ एलीशा* (पेसाडेना, कैलिफोर्निया: थ्रू द बाइबल रेडियो नेटवर्क, तिथि नहीं), 20. [5]अन्य संभावनाओं पर भी ध्यान दिया जा सकता है, जैसे ''हो सकता है कि वह सुबह जल्दी उठने वाला व्यक्ति'' हो। जहां आप रहते हैं उसी की परम्परा की आवश्यकता को ध्यान में रखकर इसका इस्तेमाल करें। [6]जो. डी. शुक्बर्ट, ''ओपन अवर आइस दैट वी मे सी,'' *दि प्रीचर'स पीरियोडिकल* (जून 1982): 17. [7]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन एंड थेलमा बी. कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन सेकंड किंग्स,* जेम्स बर्टन कॉफ़मैन कमैंट्रीज़, दि हिस्टोरिकल बुक्स, अंक 6 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1992), 81. [8]के. एफ. केल एंड एफ़. डेलिश, ''1 एंड 2 किंग्स,'' *कमैंट्री ऑन ओल्ड टैस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रोनिकल्स, एज्रा, नहेम्याह, एस्तर* (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 326. [9]जी. रावलिन्सन, ''2 किंग्स,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *1 एंड 2 किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेन्स एंड जोसेफ एस.

एक्सल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 121. [10]जेम्स ई. स्मिथ, *दि बुक्स ऑफ़ हिस्ट्री,* ओल्ड टैस्टामेंट सर्वे सीरीज़ (जोप्लिन, मिज़ोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं, 1995), 568.

[11]जेम्स डब्ल्यू. निकोल्स, ''लॉर्ड, ओपन अवर आइस,'' *चर्चिस ऑफ़ क्राइस्ट सेल्यूट यू: जेनुअरी एंड फेबरुअरी सरमन* (अबिलेन, टैक्सस: हेरल्ड ऑफ़ ट्रुथ, 1955), 9.